राज्य और भूमण्डलीकरण भाग -2

Dr.Vini Sharma

(1) नई विश्व अर्थव्यवस्था की चुनौतियाँ

* भूमण्डलीकरण

* सीमा पार व्यापार

(a) MNCs (बहुराष्ट्रीय निगम)

- केवल आर्थिक लाभ ही नहीं अन्य लाभ भी

- अत्यधिक निवेश

- राज्यों से अत्यधिक स्वतंत्रता प्राप्त

(b) बढता सूचना प्रौद्योगिकी और यातायात

* सीमा पार व्यापार

* स्टॉक / शेयर का प्रभाव

* वित्तीय व्यवस्था राज्य के नियंत्रण से बाहर

* राज्य में :- आंतरिक नीति / निवेश / रोजगार / राजस्व (सब कुछ बहुराष्ट्रीय कम्पनियों पर निर्भर)

राज्य द्वारा

* निम्न पर अब अमल कर पाना कठिन है :-

- कल्याण नीतियाँ

- आयात तथा तटकर के अवरोध

- गृह उद्योग की सुरक्षा

- रोजगार

(क्योंकि अब अर्थव्यवस्था राज्य सरकारों द्वारा नियंत्रित नहीं कि जा रही बल्कि उनका प्रबंधन :-

- विदेशी ताकतों
- मुद्रा स्फीति
- व्यापार समझौतों
- MNCs इन सब का असर पड़ता है।

राज्य इस स्थिति में भी बेहतर प्रबंध कर सकता है :-

* क्षेत्रीयकरण का लाभ उठाकर

* जैसे - अमेरिका / यूरोपीय संघ (लाभ उठा रहे हैं)

* बेहतर व्यापार नीति बना कर

* घरेलू औद्योगों को बढ़ावा देकर

* इत्यादि।

(2) नए अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों से चुनौतियाँ

* राज्य तथा अन्तर्राष्ट्रीय प्रणाली में अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों का बढ़ता प्रभाव

* नए - नए उभरते संगठन

* सभी क्षेत्रों में प्रभाव - व्यापार, समुद्र, अंतरिक्ष

संख्या

1907 - 37 अंतर सरकारी संगठन

176 अन्तर्राष्ट्रीय गैर सरकारी संगठन

1984 - 280 अंतर सरकारी संगठन

4615 अन्तर्राष्ट्रीय गैर सरकारी संगठन

और अब - बहुत ज्यादा

और अब - बहुत ज्यादा

* यह राज्य के निर्णय प्रक्रिया में शामिल हो रहे हैं।

* दबाव समूहों का कार्य कर रहे हैं।

* गैर राजनीतिक संगठन :- अन्तर्राष्ट्रीय डाक यूनियन

शक्ति का उदाहरण -

यूरोपीय संघ शक्ति

कानून बना सकता है / सजा दे सकता है / निर्देश दे सकता है / नीति पर अमल कर सकता है / सामान्य मुद्रा भी /

उद्देश्य - जापान और अमेरिका की आर्थिक शक्ति से मुकाबला करना।

(3) अन्तर्राष्ट्रीय कानून से चुनौतियाँ

* अन्तर्राष्ट्रीय कानूनों के नए रूप लागू किए गए हैं,

* इन कानूनों का दबाव राज्य पर पड़ता है।

* इन कानूनों को मानने के लिए कोई जोर - जबर्दस्ती नहीं होती।

- इसके बावजूद ये इतने महत्वपूर्ण है कि राज्यों को मानना पड़ता है।

* परम्परागत रूप

ने राज्यों और व्यक्तियों और संस्थाओं पर किसी अन्य देश में मुकदमा नहीं चलाया जा सकता था

* परंतु अब ऐसे बहूत से मामले देखने को मिलते हैं जिन में किसी बाहरी देश के न्यायलय में मुकदमा चलाया जाता है।

CyberLink PowerDirector

उदाहरण - (1) भारत के कुलभूषण यादव का मामला

(अंतर्राष्ट्रीय कोट में)

(2) Face book पर कार्यवाही

(3) मानव अधिकारों से जुड़े मामले।

मुख्य रूप से यूरोपीय संघ

* मानव अधिकारों से संबंधित मामलों को यूरोपीय यूनियन में उठाया जाता है।

* यदि किसी व्यक्ति के मानवाधिकारों का हनन होता है या राज्य उस के अधिकारों को छिनने की कोशिश करता है तो राज्य या सरकार के खिलाफ यूरोपीय आयोग में सीधे याचिका दायिला कर सकते हैं।

by PowerDirector

* मानव अधिकारों से संबंधित मामलों को यूरोपीय यूनियन में उठाया जाता है।

* यदि किसी व्यक्ति के मानवाधिकारों का हनन होता है या राज्य उस के अधिकारों को छिनने की कोशिश करता है तो राज्य या सरकार के खिलाफ यूरोपीय आयोग में सीधे याचिका दाखिला कर सकते हैं।

* लेकिन इन कानूनों को सभी राज्य मानने को तैयार नहीं है और वह इन कानूनों को स्वीकार नहीं करते।

खासतौर पर इस्लामी कट्टरवादी आन्दोलन।

राज्य के आंतरिक कार्य पर भूमण्डलीकरण का प्रभाव

प्र. 4 राज्य के आंतरिक कार्यों पर भूमण्डलीकरण का क्या प्रभाव पड़ता है?

(1) लोकतंत्रिक निर्णय करना

(2) संजातीय पुनरूत्थान

(1) लोकतंत्रिक निर्णय करना

* राष्ट्र - राज्यों के आंतरिक कार्यों पर भूमण्डलीकरण का प्रभाव पड़ा है।

* भूमण्डलीकरण लोकतंत्रिक निर्णय प्रक्रिया को भी प्रभावित कर रहा है।

* पहले राष्ट्र - राज्य पर अन्तर्राष्ट्रीय प्रणाली या भूमण्डलीकरण का प्रभाव केवल युद्ध या आक्रमण की स्थिति में होता था अब सभी स्थितियों में हो रहा है।

* हाल के वर्षों में भूमण्डलीकरण के नाम पर अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों - विश्व बैंक / अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष जैसी अन्य एजेंसिय

CyberLink PowerDirector

हस्तक्षेप इस प्रकार बढ़ गया है कि :-

* अब यह - राज्यों के कार्यों / विकास परियोजनाओं / व्यापार / अनुदान /सैनिक आयातों सभी में हस्तक्षेप कर रहे हैं।

* जिससे लोकतंत्रिक निर्णय प्रक्रिया हुई है।

* इस कि वजह से अब समस्या यह है कि किस को अधिक महत्व दिया जाए प्रादेशिक को या अन्तर्राष्ट्रीय को?

(2) संजातीय पुनरूत्थान

* विद्वानों का विश्वास था कि - जातीय पहचान मौलिक थे,

- प्रारंभ से ही थे तथा निर्धारित थे

* और यह आधुनिकीकरण के साथ विलुप्त हो जाएंगे।

* राष्ट्री - राज्य समय के साथ - साथ जातीय अल्पसंख्यकों की समस्या को हल करने में सक्षम हो जाएंगे।

* भूमण्डलीकरण के कारण 1980 के दशक में विकासशील देशों के अलावा कनाडा जैसे आर्थिक दृष्टि से विकासित देशों भी जातीय आंदोलन होने लगे।

- ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि पहचान अब केवल रक्त सम्बंध, भाषा और संस्कृति के आधार पर नहीं है।

- बल्कि अब पहचान सामाजिक अथवा राजनीतिक कार्यों द्वारा भी किया जा सकता है।

(1) इस विश्वास पर आधारित की सांस्कृतिक पहचान तथा आर्थिक समृद्धि बनाए रख जा सकत ह अथवा वतमान राज्य अलग होते हुए हासिल की जा सकती है।

उदाहरण - सोवियत संघ

(2) जो यह स्वीकार करते हैं कि राष्ट्रवादी आकांक्षा बिना पूर्ण स्वतंत्रत राज्य सत्ता के हासिल नहीं की जा सकती।

उदाहरण - युगोस्लाविया

(3) अधिक व्यापक कारण है जिसमें राज्य एक विशिष्ट जातीय समूहों की पर्याप्त देख रेख नहीं करता है जो कि पिछड़ ग
और हाशिये पर जा चुका है।

उदारहण - भारत में दलित

- इसलिए भूमण्डलीकरण राज्य के सामने बुनियादी चुनौती प्रस्तुत कर करी है।

(1) भूमण्डलीकरण एक भूमण्डलीय संस्कृति को प्रोत्साहन देता है।

(2) और जातीय पहचान स्थानीय पहचानों को

इस प्रकार राष्ट्र - राज्य को बाहर से भी समस्या का सामना करना पड़ रहा है और अन्दर से भी।